Research Ambition ISSN: 2456-0146
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer - reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.researchambition.com Email: publish2017@gmail.com
Vol. 3, Issue-IV
Feb. 2019
Impact Factor : 5.936 (SJIF) *******
e-ISJN: A4372-3068

वाल्मीकीय रामायण एवं अध्यात्मरामायण की भौगोलिक स्थिति

डॉ० भीमा देवी
पी०एच०डी० (संस्कृत)
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला–171005
मोबाइल– 9805436007, ई–मेलः bhimadevi82@gmail.com

संक्षिप्त रूप

रामायण भारतवर्ष का एक सर्वोकृष्ट धार्मिक, नैतिक एवं ऐतिहासिक ग्रन्थ है। यह आदि कवि महर्षि वाल्मीकि विरचित भारतीय साहित्य का आदि महाकाव्य है। वाल्मीकि रामायण भारत वर्ष की सांस्कृतिक एवं कलात्मक विरासत का आधार स्तम्भ है और हजारों वर्षो से भारतीय ललितकला एवं साहित्य की मूल प्रेरणा है। ''रामायणं हि आदिकाव्य वाल्मीकिश्च आदिकविः'' यह उक्ति साहित्य जगत् में इस महान् रचना एवं रचनाकार दोनों को चिरकाल से प्रथम स्थान पर अधिष्ठित करती है। रामकथा के आकर्षण के फलस्वरूप कालान्तर में कवियों व लेखकों को इससे सम्बन्धित रचना करने की प्रेरणा मिली। प्रत्येक रचना की अपनी कोई न कोई विशेषता होती है। वाल्मीकीय रामायण और अध्यात्मरामायण की भी अपनी विशिष्टता है। ग्रन्थकार ने ईश्वर भक्ति और आध्यात्मिका की भावना से प्रेरित होकर वाल्मीकि और अध्यात्मरामायण की रचना की। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि की अमरकृति रामायण न केवल संस्कृत साहित्य की अपितु प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की एक अमूल्य निधि है। यह काव्य हमें भौगोलिक एकता के बारे में ज्ञान करवाता हैं। भौगोलिक स्थिति के अन्तर्गत राज्य व द्वीप, नगर व पर्वत का वर्णन किया हैं। इस शोध–पत्र के माध्यम से रामायण काल की भौगोलिक स्थिति का विश्लेषण करना है।

शब्द कुँजीः आदि काव्य, शोण भद्र, कौशल जनपद, पञ्वटी, कारूपथ देश, गिरिव्रज नगर, सुवेल पर्वत, महेन्द्र पर्वत।

वाल्मीकि रामायण संस्कृत साहित्य का आदि काव्य है। यह भारतवर्ष का एक सर्वोत्कृष्ट धार्मिक, नैतिक तथा ऐतिहासिक ग्रन्थ रत्न है। इस ग्रन्थ में भारतीय संस्कृति का जितना भव्य रूप उपलब्ध होता है उतना अन्यत्र दुर्लभ है। यह भारतीय राष्ट्रीय एकता का एक आदर्श ग्रन्थ है और भौगोलिक एकता का भी प्रतीक है।

श्रीराम : शरणं समस्तजगतां रामं विना का गती
रामेण प्रतिहन्यते कलिमलं रामाय कार्यं नमः।
रामात त्रस्यति काल भीम भुजगो रामस्य सर्वं वशे
राम भक्तिरखण्डिता भवतु में राम त्वमेवाश्रय : ।

अर्थात् श्रीरामचन्द्र समस्त संसार को शरण देने वाले हैं। श्रीराम के बिना दूसरी कौन–सी गति है? श्रीराम कलियुग के समस्त दोषों को नष्ट कर देते हैं, अतः श्रीरामचन्द्र जी को नमस्कार करना चाहिए। श्रीराम से कालरूपी

भयंकर सर्प भी डरता है। जगत् का सब कुछ भगवान् श्रीराम के वश में है। श्रीराम में मेरी अखण्ड भक्ति बनी रहे। हे राम! आप ही मेरे आधार हैं।

रामायण में रूचि होने के कारण मेरे हृदय को यह शोध पत्र लिखने की प्रेरणा मिली। वाल्मीकि रामायण की भौगोलिक स्थिति के अन्तर्गत राज्य व द्वीप, नगर व पर्वत, वन व उपवनों का वर्णन हुआ हैं। इन राज्य व द्वीपों की सुन्दरता वन व उपवनों की सुन्दरता मन को मोह लेती हैं।

भूगाल बाह्य रूप में संस्कृति से पृथक विषय प्रतीत होता है, परन्तु गहराई से सोचने पर ज्ञात होता है कि किसी भी देश की संस्कृति, खान–पान, वेशभूषा एवं राजनीतिक स्थिति के विशिष्ट अनुशीलन के लिए उस देश के भौगोलिक स्वरूप को जानना अत्यन्त आवश्यक होता है। प्रत्येक रचना में तत्कालीन भू– भाग सम्बन्धी विविध प्रदेशों क्षेत्रों तथा अंचलो आदि का वर्णन रहता है जिसके आधार पर देश की सीमा का निर्धारण करते हुए तत्कालीन जनपदों, नगरों आदि का विवरण प्राप्त होता हैं।

राज्य एवं द्वीप

वाल्मीकीय रामायण में सर्वप्रथम राज्य शोणभद्र तटवर्ती प्रदेश का वर्णन है। जब ऋषिमण्डली सहित विश्वामित्र के द्वारा पशु–पक्षियों को वापिस तपोवन भेज दिया और फिर दूर तक का मार्ग तय कर लेने के बाद जब सूर्य अस्ताचल को जाने लगे।

यथा– निवर्तयामास ततः सर्पिसडघः स पक्षिणः।
ते गत्वा दूरमध्वानं लम्बमाने दिवाकरे।[1]

तब उन ऋषियों ने पूर्ण सावधान रहकर शोणभद्र के तट पर पड़ाव डाला। जब सूर्यदेव अस्त हो गए तब स्नान करके उन सब ने अग्निहोत्र का कार्य पूर्ण किया।

वासं चक्रुर्मुनिगणा : शोणाकूले समाहिता : ।
तेऽस्तं गते दिनकरे स्नात्वा हुतहुताशना : ।।[2]

उसके पश्चात् कौशल जनपद का वर्णन है।

एता वाचो मनुष्याणां ग्रामसंवासवासिनाम।
श्रृण्वन्नतिययौ वीर : कोसलान् कोसलेश्वर :।।[3]

कहने का अभिप्राय है कि जनपद में छोटे–बड़े गाँवों में रहने वाले मनुष्यों की बातों को सुनते हुए वीर कोसपति राम कोसल जनपद की सीमा को लाँघकर आगे बढ़ जाते है। कौशल जनपद के बाद वत्सदेश का वर्णन आता है। जब रामचन्द्र के वन के मार्ग में बहुत दूर निकल जाने के कारण दृष्टि से ओझल हो गये। तब तपस्वी सुमन्त्र के हृदय में व्यथा हुई तब लोकपालों के समान प्रभावशाली वरदायक महात्मा राम महानदी गङ्गा को पार

---

1 वाल्मीकि रामायण, 1.31.19
2 वही, 1.31.20
3 वही, 2.49.9

करके क्रमशः समृद्धिशाली वत्सदेश (प्रयाग) में जा पहुँचे, जो सुन्दर धन–धान्य से सम्पन्न था। वहाँ के लोग हृष्ट–पुष्ट थे।[4]

कैकेयदेश

वसिष्ठ जी की आज्ञा से अयोध्या से कैकेय देश को जाने वाले पाँच दूत रास्ते का खर्च लेकर अच्छे घोड़े पर सवार होकर अपने–अपने घर को गए।

उदाहरणस्वरूप– दत्तपथ्यशना दूताजग्मुः स्वं स्वं निवेशनम।
केकयास्ते गमिष्यन्तो हयानारूह्य सम्मतान्।[5]

हस्तिनापुर

कैकेय देश को जाने वाले दूत हस्तिनापुर में गंगा को पार करके पश्चिम की ओर चले और पाञ्चालदेश में पहुँचकर कुरूजाङ्गल प्रदेश के बीच से होते हुए आगे बढ़ गए। अयोध्याकाण्ड मे इसका वर्णन मिलता है और यह अर्थ इस श्लोक में निहित है–

ते हस्तिनपुरे गङ्गा तीर्त्वा प्रत्यङ्मुखा ययुः।
पाञ्चालदेशमासाद्य मध्येन कुरूजाङ्गलम्।।[6]

पञ्चवटी प्रदेश

हस्तिनापुर और पाञ्चालदेश के बाद नाना प्रकार के सर्पो, हिंसक जन्तुओं और मृगों से भरी हुई पञ्चवटी में पहुँचकर श्रीराम उद्दीप्त तेज वाले अपने भाई लक्ष्मण से इस प्रकार कहते हैं कि–

आगताः स्म यथोदिद्ष्टं यं देशंमुनिरप्रवीत्।[7]
अयं पञ्चवटी देशः सौम्य पुष्पितकाननः।।

अभिप्राय यह है कि मुनिवर अगस्त्य ने जिस स्थान का परिचय हमें दिया था उनके तथाकथित स्थान में हम आ पहुँचे और यही पञ्चवटी का प्रदेश हैं यहाँ का वनप्रान्त पुष्पों से कैसी शोभा पा रहा है।

कारूपथदेश

पञ्चवटी प्रदेश के बाद कारूपथदेश का वर्णन है जब राम की आज्ञा से भरत और लक्ष्मण द्वारा कुमार अङ्गद और चन्द्रकेतु को कारूपथ देश के विभिन्न राज्यों पर नियुक्ति का वर्णन हैं।

यथा– तथोक्तवति रामेतु भरतः प्रत्युवाचह
अयं कारूपथो देशो रमणीयो निरामयः।[8]

---

4 वाल्मीकि रामायण, 2.5.19
5 वही, 2.68.10
6 वही, 2.68.13
7 वही, 2.68.13
8 वाल्मीकि रामायण, 2.15.2

भाव यह है कि जब श्री राम के द्वारा ऐसा कहा जाना कि ऐसा देश देखो जहाँ निवास करने से दूसरे राजाओं को पीड़ा न हो तब भरत उत्तर देते हुए कहते हैं कि आर्य! यह कारूपथ नामक देश बड़ा सुन्दर है। वहाँ किसी प्रकार की रोग–व्याधि का भय नहीं है। वाल्मीकीय रामायण में केवल मात्र राज्यों का ही वर्णन हुआ है, द्वीपों का वर्णन नहीं हुआ हैं।

नगर एवं पर्वत

वाल्मीकीय रामायण में सर्वप्रथम अयोध्या नगर का वर्णन आया है। कोशल नाम से प्रसिद्ध एक बहुत बड़ा जनपद है जो सरयू नदी के किनारे बसा हुआ है। उसी जनपद में अयोध्या नाम की एक नगरी है जो समस्त लोकों में विख्यात है।

उस पुरी को स्वयं महाराज मनु ने बनवाया और बसाया था।

अयोध्या नाम नगरी तत्रासील्लोकविश्रुता।
मनुना मानवेन्द्रेय या पुरी निर्मिता स्वयम्।।[9]

महोदय नगर

महाराज कुश की आज्ञानुसार नरश्रेष्ठ राजकुमारों ने उस समय अपने लिए पृथक–पृथक नगरों का निर्माण कराया था उसमें महातेजस्वी कुशाम्ब ने 'कौशम्बी' पुरी बसायी जिसे आजकल 'कोसम' कहते हैं। धर्मात्मा कुशनाभ ने 'महोदय' नामक नगर का निर्माण कराया।

कुशाम्वस्तु महातेजाः कौशाम्बीमकरोत् पुरीम।
कुशनाभस्तु धर्मात्मा पुरं चक्रे महोदयम्।।[10]

गिरिव्रज नगर

परम बुद्धिमान असूर्तरजस में 'धर्मारण्य' नामक एक श्रेष्ठ नगर बसाया तथा राजा वसु ने 'गिरिव्रज' नामक नगर की स्थापना की।

असूर्तरजसों नाम धर्मारण्यं महामतिः।
चक्रे पुखरं राजा वसुनाम गिरिव्रजम्।।[11]

विशालापुरी

पूर्वकाल में महाराज इक्ष्वाकु के एक परम धर्मात्मा पुत्र थे 'इक्ष्वाकोऽस्तु नरव्याघ्र पुत्रः परमधार्मिकः' [12] जो विशाल नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका जन्म अलम्बुषा के गर्भ से हुआ था। उन्होंने इस स्थान पर विशाला नाम की पुरी बसायी थी।

अलम्बुषायामुत्पन्नों विशालइति विश्रुतः।
तेन चासीदिह स्थाने विशालेति पुरी कृता।।[13]

इसके अतिरिक्त शृंङ्गवेरपुर, किष्किन्धानगर, लङ्कापुरी, गन्धर्वदेश, इत्यादि का वर्णन प्राप्त होता है।

---

[9] वाल्मीकि रामायण, 1.5.6
[10] वही, 1.32.7
[11] वही, 1.32.8
[12] वही, 1.47.11
[13] वही, 1.47.12

पर्वत

पर्वतों में सर्वश्रेष्ठ महेन्द्र पर्वत का वर्णन मिलता है। परशुराम के द्वारा यह कहा जाना वीर राघव! आप मेरी इस गमनशक्ति को नष्ट न करें। मैं मन के समान वेग से अभी महेन्द्र नामक श्रेष्ठ पर्वत पर चला जाऊँगा।[14]

चित्रकूट पर्वत

इका वर्णन तब आता है जब लक्ष्मण और सीता के सहित राम चित्रकूट पर्वत पर निवास करते है। उदाहरण स्वरूप जिस पर बहुत से लंगूर विचरते है। वहाँ वानर और रीछ भी निवास करते हैं। वह पर्वत चित्रकूट नाम से विख्यात और गन्धमादन के समान मनोहर है।[15]

अपरताल पवर्त

वसिष्ठ जी की आज्ञा से पाँच दूत अयोध्या से केकयदेश के राजगृह नगर में जाते समय अपरताल नामक पर्वत के अन्तिम छोर अर्थात् दक्षिण भाग और प्रलम्बगिरी के उत्तर भाग में दोनों पर्वतों के बीच से बहने वाली मलिनी नदी के तट पर होते हुए आगे बढ़े।[16]

ऋष्यमूक पर्वत

ऋष्यमूक पर्वत पम्पासरोवर के पूर्वभाग में है, जहाँ के वृक्ष फूलों से सुशोभित दिखायी देते हैं। उसके ऊपर चढ़ने में बड़ी कठिनाई होती हैं, क्योंकि वह छोटे–छोटे सर्पों अथवा हाथियों के बच्चों द्वारा सब ओर से सुरक्षित हैं। ऋष्यमूक पर्वत उदार (अभीष्ट फल को देने वाला है) पूर्वकाल में साक्षात ब्रह्मा जी ने उसका निर्माण किया और उसे औदार्य आदि गुणों से सम्पन्न बनाया।[17]

मैनाक पर्वत

जब हनुमान जी समुद्र का लङ्घन करते हैं तब मैनाक के द्वारा हनुमान का स्वागत किया जाता है। पर्वत के द्वारा यह कहा जाना कि इस पर्वत पर थोड़ी देर विश्राम करो तब हनुमान ने हँसते–हँसते वहाँ मैनाक पर्वत का अपने हाथ से स्पर्श किया और आकाश में ऊपर उठकर चलने लगे।[18]

सुबेल पर्वत

सुबेल पर्वत का वर्णन युद्धकाण्ड में आया है। जब श्री राम का प्रमुख वानरों के साथ सुबेल पर्वत पर चढ़ने का विचार करके जिनके पीछे लक्ष्मण जो चल रहे थे, भगवान् श्रीराम सुग्रीव से और धर्म के ज्ञाता मन्त्रवेत्ता विधिज्ञ एवं अनुरागी निशाचर विभीषण से भी उत्तम और मधुर वाणी में मित्रों!

सुबेलं साधु शैलेन्द्रमिमं धातुशतैश्चितम्।
अध्यारोहामेह सर्वे वत्स्याभोऽत्र निशमिमाम्।।[19]

---

[14] वाल्मीकि रामायण, 1.76.15
[15] वही, 2.54.26
[16] वही, 2.68.12
[17] वही, 3.73.32
[18] वाल्मीकि रामायण, 5.1.132
[19] वही, 6.38.3

हिमालय पर्वत

जाम्बवान के आदेशानुसार हनुमान को इस प्रकार कहना कि हनुमान!

गत्वा परममध्वानमुपर्युवरि सागरम्।
हिमवन्तं नगरेष्ठं हनूमन गन्तुमर्हसि।।[20]

कहने का अभिप्राय यह है कि हनुमान समुद्र के ऊपर–ऊपर उड़कर बहुत दूर का रास्ता तय करके तुम्हें पर्वतश्रेष्ठ हिमालय पर जाना चाहिए। वाल्मीकीय रामायण में इन्हीं नगरों और पर्वतों का वर्णन हैं।

अध्यात्मरामायण में नगर व पर्वत

विदेहनगर

सर्वप्रथम अध्यात्मरामायण में विदेहनगर का वर्णन आता है। राम और लक्ष्मण के सहित विश्वामित्र मिथलापुरी से चलकर प्रातः काल होते ही विदेहनगर में पहुँचकर ऋषियों के निवास स्थान में ठहर गये।[21]

मिथलापुरी

राम के द्वारा मिथलापुरी को चलने के लिए शीघ्रता करते हुए मन्त्रियों से कहा– 'हाथी घोड़े, रथ और पदातियों के सहित सब लोग मिथलापुरी को चलो।[22]

जनकपुर

विश्वामित्र के द्वारा यह कहा जाना कि जनक जी का बड़ा भारी यज्ञ देखने के लिए हम लोग जनकपुर चलेंगें। श्री महादेवी का धरोहर के रूप में रखा हुआ एक बड़ा भारी धनुष है।

विदेहराजनगरे जनकस्य महात्मनः।
तत्र माहेश्वरं चापमस्ति न्यस्तं पिनाकिना।।[23]

पर्वत

सबसे पहले चित्रकूट पर्वत का वर्णन आता है। जब मनुष्य मुनिकुमारों की बनायी हुई डोंगी पर चढ़कर यमुना के पार हुए और मुनिवर के बताये हुए मार्ग से चित्रकूट पर्वत की ओर चले जहाँ पर वाल्मीकि का आश्रम था।[24]

महेन्द्र पर्वत

भक्तिहीन पुरुष भी यदि इस स्तोत्र का पाठ करें तो उसे सर्वदा आपकी भक्ति मिले और ज्ञान प्राप्त हो तथा अन्त में आपकी स्मृति हो। तब रघुनाथ के ऐसा ही हों, इस प्रकार कहने पर परशुराम जी ने उनकी परिक्रमा कर उन्हें प्रणाम किया और उनसे पूजित हो उनकी आज्ञा से महेन्द्र पर्वत पर चले गए।

---

[20] वही, 6.74.29
[21] अध्यात्मरामायण, 1.6.6
[22] अध्यात्मरामायण, 1.6.36
[23] वही, 1.5.13
[24] वही, 2.6.43

तथेति राघपेणोक्तः परिक्रम्य प्रणम्य तम।
पूजितस्तदनुज्ञातों महेन्द्राचलमन्वगात्।।[25]

इसके अतिरिक्त द्रोणपर्वत, सुवेल पर्वत, विन्ध्याचल पर्वत, महेन्द्र, ऋष्यमूक, प्रवर्षण, प्रस्त्रवण, इन सब पर्वतों का उल्लेख हुआ है।

निष्कर्ष

दोनों रामायणों की भौगोलिक दृष्टि से तुलना करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि वाल्मीकीय रामायण में नगरों के वर्णन में कहीं–कहीं भिन्नता है। अध्यात्मरामायण में महोदय नगर, गिरिव्रज नगर, विशालापुरी, गन्धर्वदेश और शृङ्गवेरपुर का वर्णन नहीं मिलता है और नगरों का वर्णन वही मिलता है जो वाल्मीकीय रामायण में वर्णित है। इसलिए कह सकते हैं कि भौगोलिक स्थिति में कहीं–कहीं भेद दोनों रामायणों में देखने को मिलता है।

****

[25] वही, 1.7.50